

जुलाई के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह, अंजली पटेल, प्रवीण कुमार उपाध्याय, एस.एस. राठौर और **ऋषभ सिंह चंदेल**

"जुलाई माह खरीफ की फसलों के लिए सबसे महत्वपूर्ण महीनों में से एक है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां खेती वर्षा पर निर्भर करती है। इस महीने मानसून आ चुका होता है, इसलिए जरूरी हो जाता है कि सभी कार्यों को समय से किया जाये। खरीफ फसलों का देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में आधे से भी अधिक का योगदान होता है। खरीफ मौसम में उगायी जाने वाली मुख्य फसलें जैसे-धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, मूंग, उड़द, लोबिया, सोयाबीन, मूंगफली, सूरजमुखी, कुसुम, तिल, कपास एवं जूट आदि प्रमुख हैं। फसलों के उत्पादन में उपयुक्त सस्य विधियां अपनाकर उत्पादन लागत में कमी एवं प्रति इकाई उपज में वृद्धि की जा सकती है। अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि अधिक उपज देने वाली उन्नत प्रजातियों की गुणवत्ता का स्वस्थ बीज, संतुलत पोषक तत्व प्रबंधन, एकीकृत खरपतवार प्रबंधन, समुचित जल प्रबंधन, एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, उपयुक्त समय पर फसल की कटाई एवं मड़ाई तथा उपयुक्त भंडारण इत्यादि अपनाकर किसान लागत कम करके उत्पादन में बढ़ोतरी कर सकते हैं। कुल मिलाकर, जुलाई का महीना कृषि गतिविधियों के लिए अत्यंत व्यस्त और निर्णायक होता है, जो पूरे कृषि चक्र की नींव रखता है। अत: इस लेख में फसलों के उत्पादन की आधुनिक वैज्ञानिक विधियों के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी गई है।"

धान की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके पौधों के जीवनकाल में औसत तापमान 20-35 डिग्री सेल्सियस की आवश्यकता होती है। पौधे के अच्छे विकास के लिए अच्छी वर्षा की आवश्यकता होती है।

- **मृदा:** धान की खेती के लिए मृदा का पी-एच मान प्राय: 6.5-8.5 सर्वोत्तम होता है। इसके लिए अच्छी जलधारण क्षमता वाली मटियार या मटियार दोमट एवं चिकनी मृदा अच्छी मानी जाती हैं। सिंचाई की समुचित व्यवस्था तथा सही प्रबंधन से अधिकतर मृदा में धान की अच्छी पैदावार ली जा सकती है।
- **खेत की तैयारी:** गर्मी की जुताई के बाद 2-3 जुताइयां करके खेत की तैयारी करनी चाहिए। खेत को समतल करने के साथ मजबूत मेड़बंदी भी कर देनी चाहिए, ताकि वर्षा का पानी अधिक मात्रा में संचित किया जा सके। धान की रोपाई के लिए एक सप्ताह पूर्व खेत की सिंचाई कर दें एवं रोपाई से पहले 2-3 जुताइयां हैरो से करें। इसके बाद पानी भरकर खेत में पडलर से जुताई करके एवं पाटा लगाकर मिट्टी को लेहयुक्त एवं समतल बना दें। इसमें 20-25 कि.ग्रा. ट्राइकोडर्मा को 60 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद या वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर एक सप्ताह तक छाया में सुखाने के बाद खेत में एक समान छिड़काव कर दें, जिससे मृदाजनित रोगों में कमी आयेगी।
- **रोपाई:** इसके लिए 20-25 दिनों पुरानी

सस्य विज्ञान संभाग, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012

पौध, जिसमें 4-5 पत्तियां हों, उपयुक्त होती है। मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई माह के प्रथम पखवाड़े तक तथा शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की रोपाई जुलाई के दूसरे पखवाड़े तक पूरी कर लेनी चाहिए। धान की सुगंधित प्रजातियों की रोपाई माह के अन्त में प्रारंभ करें। प्रत्येक वर्ष धान-गेहूं फसलचक्र अपनाने वाले क्षेत्रों में हरी खाद या 10-12 टन/हैक्टर गोबर की सड़ी खाद का प्रयोग करें।

- पौध उखाड़ने से एक दिन पहले क्यारी में अच्छी सिंचाई करें और रोपाई वाले दिन सुबह स्वस्थ, रोगमुक्त और शुद्ध किस्म की पौध को अलग करके 5-8 सें.मी. व्यास के नरम बंडलों में बांध लेना चाहिए। रोपाई 20-30×15 सें.मी. की दूरी पर करें। 3 सें.मी. की गहराई पर एक जगह पर 2-3 पौधे ही लगायें। देर से अथवा ऊसर मृदा में रोपाई करने की अवस्था में रोपाई के लिए लगभग 35-40 दिन पुरानी पौध को 15×10 सें.मी. की दूरी पर 3-4 पौधों के समूह में प्रत्येक स्थान पर लगाएं।
- **पोषक तत्व प्रबंधन:** उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के अनुसार ही करना चाहिए। सामान्यत: धान की बौनी प्रजातियों के लिये 100-120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटाश एवं 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हैक्टर की दर से प्रयोग कर सकते हैं। बासमती प्रजातियों के लिए 80-100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40-50 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20-25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हैक्टर देना चाहिए। सिंगल सुपर फॉस्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं जिंक की पूरी मात्रा आखिरी जुताई के समय देनी चाहिए। यूरिया की एक तिहाई मात्रा रोपाई के 5-8 दिनों बाद (पौध अच्छी तरह से जड़ पकड़ ले), दूसरी 25-30 दिनों बाद (कल्ले फूटते समय) और तीसरी 50-60 दिनों बाद (फूल आने से पहले) खड़ी फसल में छिड़काव करें। यदि हरी खाद या गोबर की खाद का प्रयोग किया गया हो, तो नाइट्रोजन की मात्रा 20-25 कि.ग्रा./हैक्टर तक कम कर सकते हैं।
- **जैव उर्वरक का प्रयोग:** नील हरित शैवाल की अधिकतर प्रजातियां प्रतिवर्ष लगभग 20-30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन/हैक्टर मृदा में स्थापित करती हैं, जिसका प्रयोग धान की फसल द्वारा होता है। रोपाई के एक सप्ताह बाद, खड़े पानी में 10-15 कि.ग्रा. जैव उर्वरक प्रति हैक्टर की दर से बिखेर दें। शैवाल का प्रयोग कम से कम तीन वर्ष तक नियमित करें और ध्यान रखें कि खेत में पानी सूखने न पाये।
- **खरपतवार नियंत्रण:** खरपतवार प्राय: फसल से नमी, पोषक तत्व, सूर्य का प्रकाश तथा स्थान के लिये प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे मुख्य फसल के उत्पादन में कमी आ जाती है। धान की फसल में खरपतवारों द्वारा 15-85 प्रतिशत की हानि आंकी गई है। सीधे बोए गए धान की तुलना में रोपाई वाले धान में खरपतवार का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता है। खरपतवार रोपाई वाले धान में 4-12 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 1-13 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 7-14 कि.ग्रा. पोटाश तथा सीधे बोये गये धान में 20-40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 5-15 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 15-50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से शोषित कर लेते हैं तथा धान की फसल को पोषक तत्वों से वंचित कर देते हैं।

श्री (एस.आर.आई.) पद्धति

- यह एक ऐसी पद्धति है, जिसमें जल उपयोग दक्षता, मृदा उत्पादकता, श्रम शक्ति एवं निवेशित पूंजी की दक्षता एक साथ बढ़ाने की क्षमता है। श्री पद्धति से उगाई गई फसल द्वारा परम्परागत विधि की अपेक्षा औसतन 10-30 प्रतिशत अतिरिक्त पैदावार विभिन्न स्थानों पर प्राप्त की गयी है। इसके अन्तर्गत 50 प्रतिशत तक सिंचाई जल की बचत, 90 प्रतिशत बीज की बचत, मृदा स्वास्थ्य में सुधार, 30-40 प्रतिशत रासायनिक उर्वरक की बचत एवं लागत में कमी का दावा किया जाता है।
- रोपाई के लिए निर्धारित दूरी बनाए रखने हेतु रस्सी में बांधी गई गांठों या लकड़ी या लोहे से बने वर्गाकार मार्कर

धान की सीधी बुआई

- धान की सीड ड्रिल द्वारा सीधी बुआई संसाधन संरक्षित खेती की एक तकनीक है, जिससे 20 प्रतिशत जल, समय तथा श्रम की बचत होती है। वर्तमान समय में इसके लिए जीरो टिल प्लान्टर, टर्बो सीडर, पीसीआर प्लान्टर, रोटरी डिस्क ड्रिल, डब्ल्यू डिस्क कल्टीवेटर आदि मशीनें उपलब्ध हैं। धान की अच्छी फसल के लिए बुआई का समय, बीज दर, बीज की गहराई, बीजोपचार एवं खरपतवार नियंत्रण इत्यादि महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। इस विधि में फसल 10-15 दिन पहले तैयार हो जाती है। इससे अगली फसल की बुआई उचित समय से करके पूरी फसल प्रणाली की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है।



- धान की सीधी बुआई उचित नमी में खेतों में आवश्यकतानुसार ग्लाइफोसेट एवं पैराक्वाट खरपतवारनाशी का प्रयोग कर जीरो टिल मशीन से की जाती है।
- धान की सीधी बुआई करते समय कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है: बुआई करने से पहले जीरो टिल मशीन का संशोधन कर लेना चाहिए। इससे 20-25 कि.ग्रा/हैक्टर बीज एवं 120 कि.ग्रा. डीएपी एवं 3-4 सें.मी. गहराई सुनिश्चित हो। बीज अधिक गहराई में जाने से अंकुरण एवं कल्ले कम होते हैं और पैदावार में कमी आ जाती है। इसके अलावा ड्रिल की नली बंद न हो, इसका खास ध्यान रखना चाहिए। यूरिया और म्यूरेट ऑफ पोटाश का प्रयोग मशीन के खाद बक्से रखकर नहीं करना चाहिए। इनका प्रयोग टॉप ड्रेसिंग के रूप में पौध स्थापित होने के बाद सिंचाई उपरान्त करना चाहिए।
- **नई किस्में:** भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने बासमती धान की 2 रोबिनोवीड किस्में विकसित की हैं: अ. पूसा बासमती 1985, ब. पूसा बासमती 1979।

सारणी 1. धान में खरपतवार नियंत्रण हेतु विभिन्न खरपतवारनाशी

खरपतवारनाशी	सक्रिय तत्व	मात्रा/हैक्टर	प्रयोग का समय	खरपतवारों पर नियंत्रण
पायराजोसल्फ्यूरॉन ईथाइल (10 प्रतिशत)	20 ग्राम	200 ग्राम	रोपाई/बुआई के 3 दिनों के अन्दर	मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
बिस्पायरीबैक सोडियम (10 प्रतिशत) (नोमिनी गोल्ड)	25 ग्राम	250 मि.ली.	रोपाई/बुआई के 17-20 दिनों बाद	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
एनीलोफॉस (एनीलोगार्ड)	400-500 ग्राम	-	बुआई/रोपाई के 3-4 दिनों बाद	घास एवं मोथाकुल के खरपतवार
प्रेटिलाक्लोर (37 प्रतिशत)	555 ग्राम	1500 मि.ली.	बुआई के 3 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
बेनसल्फ्यूरॉन मिथाइल (0.6 प्रतिशत)+ प्रेटिलाक्लोर (6 प्रतिशत)	6+600 ग्राम	10 कि.ग्रा.	रोपाई के 8 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
पेण्डीमेथिलीन (30 प्रतिशत)	750-1000 ग्राम	2.5-3.3 ली.	बुआई के 3 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
पिनाक्सुलम (1.02 प्रतिशत)+ साइहैलोफॉप ब्यूटाईल (5.1 प्रतिशत)	135 ग्राम	2250 मि.ली.	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल, मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
फेनाक्जाप्राप (5 प्रतिशत)+ इथाक्सी सल्फ्यूरॉन (15 प्रतिशत)	60+20 ग्राम	667 मि.ली.+ 135 ग्राम	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल, चौड़ी पत्ती एवं मोथाकुल
फेनाक्जाप्राप पी-ईथाइल (9 प्रतिशत)	60 ग्राम	667 मि.ली.	बुआई के 25 दिनों बाद	घासकुल
मेटसल्फ्यूरॉन मिथाइल (10 प्रतिशत)+ क्लोरीम्यूरॉन ईथाइल (10 प्रतिशत)	4 ग्राम	20 ग्राम	बुआई के 25 दिनों बाद	मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
इथाक्सी सल्फ्यूरॉन (15 प्रतिशत)	20 ग्राम	135 ग्राम	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती

का उपयोग किया जा सकता है। श्री पद्धति में मात्र 8-12 पुरानी पौध का उपयोग होता है, जिसे खुरपी से इस प्रकार उखाड़ें कि बीज चोल एवं जड़ों के साथ मिट्टी भी लगी रहे। यदि नर्सरी मैट विधि से तैयार की गई है, तो मैट को उठाकर सीधे रोपण स्थल तक ले जाया जा सकता है। इसमें 2-3 पर्णीय पौध को 25×25 सें.मी. की दूरी पर, 2-3 सें.मी. की गहराई पर अंगूठे एवं अनामिका की सहायता से, एक-एक पौध बीज चोल एवं मिट्टी सहित प्रति हिल बगैर पानी भरे खेत में लगाएं। पौध की जड़ों को सूखने से बचाने के लिए नर्सरी से निकालने के आधे घंटे के भीतर रोपाई कर लेनी चाहिए।

- कोनो वीडर द्वारा खरपतवार नियंत्रण करने से खरपतवार मिट्टी में दबकर सड़ते हैं, जिससे जैविक खाद बनती है और पौधों को पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। इसके उपयोग से मिट्टी भुरभुरी होती है और वायु संचार बढ़ जाता है, जिससे पौधों की वृद्धि बेहतर होती है। रोपाई के 10 दिनों बाद से प्रत्येक 10 दिनों के अंतराल पर 3-4 बार वीडर चलाना चाहिए। इसके लिए खेत में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है।



श्री पद्धति से धान की खेती

- **धान की संडा रोपाई (डब्ल्यू ट्रान्सप्लाटिंग):** पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार में धान की फसल को जुलाई के प्रारंभ से अक्टूबर के मध्य तक लगभग 100 दिनों तक अत्यधिक नम अवस्था का सामना करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में धान की खेती अपलैन्ड या लो लैन्ड में की जाती है। अपलैन्ड खेतों में मानसून आने के बाद लम्बे ब्रेक की स्थिति में धान की फसल को जल की कमी का सामना करना पड़ता है, वहीं दूसरी तरफ लो लैन्ड खेतों में बहुत अधिक वर्षा हो जाने पर खेतों में आवश्यकता से अधिक पानी, जल निकास की व्यवस्था समुचित न होने से इकट्ठा हो जाता है, जिससे रोपाई में विलंब हो जाता है। इन दोनों ही स्थितियों में धान के पौधों में कम कल्ले निकलते हैं तथा बढ़वार अच्छी नहीं होती है। ऐसे में संडा, जिसमें पूर्व में रोपे गये मदर प्लांट से कल्लों को अलग करके प्राप्त किया जाता है और रोपाई दोबारा की जाती है। पहली रोपाई 3 सप्ताह की अवधि के पौधे 20×10 सें.मी. की दूरी पर करें एवं दूसरी रोपाई पहले रोपे गये धान के 3 सप्ताह बाद करें, जिसे 10×10 सें.मी. की दूरी पर रोपना चाहिये।

मक्का

- सिंचित क्षेत्रों में मक्का की बुआई मानसून आने के 10-15 दिनों पहले कर देनी चाहिए। वर्षा आधारित क्षेत्रों में सामान्यत: वर्षा के आने पर ही मक्का की बुआई की जाती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मेड़ बनाकर उनके ऊपर मक्का की बुआई करनी चाहिए तथा कम वर्षा वाले क्षेत्रों में कूड़ में बुआई करनी चाहिए। इसकी बुआई के लिए संकर प्रजातियों की 20-22 कि.ग्रा., संकुल प्रजातियों की 18-20 कि.ग्रा. एवं देसी-छोटे दाने वाली प्रजाति के लिए 16-18 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से बीज पर्याप्त होता है।
- स्वीटकॉर्न का बीज हल्का होने के कारण 7-10 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त रहता है। अच्छे अंकुरण के लिए बीजों को रातभर पानी में भिगोकर तथा सुबह छाया में सुखाकर बोयें। मक्का में पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 75×20 सें.मी. या 60×25 सें.मी. रखते हैं। यदि मक्का की बुआई स्वीटकॉर्न, बेबीकॉर्न एवं पॉपकॉर्न के

लिए की जा रही है, तो पौधों के बीच की दूरी क्रमशः 60-75×20-25, 45×15 सें.मी. एवं 60×20 सें.मी. उचित पाई गई है। बीज बोने से पूर्व 1 कि.ग्रा. बीज को 2.5 ग्राम थीरम या 2.0 ग्राम कार्बेण्डाजिम से शोधित कर लें। जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप होता है, वहां आखिरी जुताई पर क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 2.5 लीटर मात्रा को 5.0 लीटर पानी में घोलकर 20 कि.ग्रा. बालू में मिलाकर प्रति हैक्टर की दर से मिट्टी में मिला दें। इसके अलावा बुआई से पहले एजोस्पिरिलम के 3-4 पैकेट से उपचार करने से बेबीकॉर्न की गुणवत्ता और उपज में वृद्धि होती है।

मक्का की उन्नत संकर प्रजातियां

- उन्नत पूसा एचएम-4, उन्नत पूसा एचएम-8, उन्नत पूसा एचएम-9, पूसा जवाहर संकर मक्का-1, एचएम-4, एएच-4725, एसएमएच-3904, जेकेएमएच-502 आदि।

मक्का की प्रोटीनयुक्त प्रजातियां

- उन्नत पूसा विवेक क्यूपीएम-9, एचक्यूपीएम-1, एचक्यूपीएम-4, एचक्यूपीएम-5, एचक्यूपीएम-7 आदि प्रमुख हैं। इन प्रजातियों को उन क्षेत्रों में बोना चाहिए जहां पर सिंचाई देकर समय से बुआई हो सके।

स्वीटकॉर्न की उन्नत प्रजातियां

- जैसे-एचएम-4, गंगा सफेद-2, पूसा अर्ली हाइब्रिड मक्का-3 आदि प्रमुख हैं।

बेबीकॉर्न (शिशु मक्का) की उन्नत प्रजातियां

- भुट्टे की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए बेबीकॉर्न की प्रजाति का चयन करें, भुट्टे के दानों का आकार और दानों का सीधी पंक्ति में होना, एक समान भुट्टे पकने वाली प्रजाति जो मध्यम ऊंचाई की अगेती परिपक्व (55 दिन) हों, उनको प्राथमिकता देनी चाहिए। बेबीकॉर्न की उन्नत प्रजातियां जैसे-शुगर बेबी, वीएल-78, एचएम-4, वीएन-42, एचएएम-129, गोल्डन बेबी एवं जी 5414 आदि प्रमुख हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

- मृदा परीक्षण के आधार पर ही उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। सामान्यतः दीर्घकालिक प्रजातियों के लिए 120-150 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर नाइट्रोजन

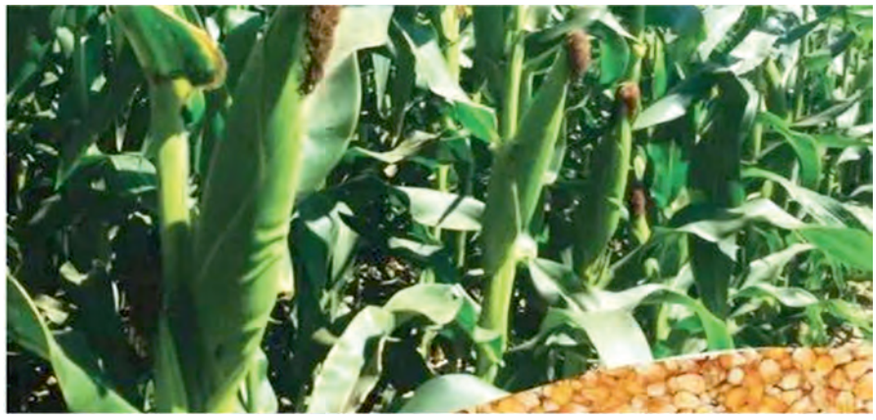

संकर मक्का पूसा एचएम-9

तथा मध्यम एवं जल्दी पकने वाली प्रजातियों के लिए क्रमशः 80-100 एवं 60-80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन/हैक्टर पर्याप्त होती है। जबकि 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 50 कि.ग्रा. पोटेशियम/हैक्टर सभी प्रजातियो के लिए आवश्यक होती है। स्वीटकॉर्न के लिए नाइट्रोजन 120 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 60 कि.ग्रा., पोटेशियम 40 कि.ग्रा. एवं जिंक सल्फेट 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है।

- बेबीकॉर्न में, बेसल ड्रेसिंग के रूप में 75:60:20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से एनपीके एवं बुआई के तीन सप्ताह बाद शीर्ष ड्रेसिंग के रूप में 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन और 20 कि.ग्रा. पोटाश देना चाहिए। यदि मक्का की बुआई बलुई मृदा में की जाती है या खेत में जिंक की कमी हो तो 25 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से जिंक सल्फेट को खेत में बुआई से पूर्व डालना चाहिए। इसमें से नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फॉस्फोरस, पोटेशियम एवं जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा बुआई के समय 10-15 सें.मी. की गहराई पर पंक्तियों में दें।

खरपतवार नियंत्रण

- मक्का में पहली निराई अंकुरण के 15 दिनों बाद तथा दूसरी निराई 35-40 दिनों बाद करनी चाहिए। एट्राजीन 2 कि.ग्रा./हैक्टर माध्यम से भारी मृदा में तथा 1.25 कि.ग्रा./हैक्टर हल्की मृदा में बुआई के अगले 2 दिनों में 500 लीटर/हैक्टर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। इस शाकनाशी के प्रयोग से एकवर्षीय घासकुल एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार बहुत ही प्रभावी रूप से नियमित हो जाते हैं। मजबूत खरपतवारों जैसे कि वन पट्टा, रसभरी को नियंत्रित करने हेतु बुआई के दो दिनों के अन्दर एट्राटॉफ 600 ग्राम/एकड़, स्टाम्प 30 ई.सी. या ट्रेफ्लान 48 ई.सी. (ट्रेफ्लुरेलिन) प्रत्येक 1 लीटर/एकड़ अच्छी तरह से मिलाकर 200 लीटर पानी के साथ प्रयोग करने पर अच्छे परिणाम आते हैं।

बाजरा

बुआई

- बाजरे की बुआई जुलाई के द्वितीय पखवाड़े में करें। एक हैक्टर क्षेत्र के लिए 4-5 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर पर्याप्त होता है। बाजरे की फसल भारी वर्षा वाले उन क्षेत्रों में अच्छी तरह से ली जा सकती है, जहां पर पानी का भराव न हो। इसके लिए बलुई दोमट मृदा अत्यंत उपयुक्त होती है। किसी कारण से बाजरे की बुआई समय पर नहीं की जा सकी हो, तो फसल देरी से बोने की अपेक्षा उसे रोपना अधिक लाभप्रद होता है। एक हैक्टर क्षेत्र में पौधे रोपने के लिए लगभग 500-600 वर्ग मीटर में 2-2.5 कि.ग्रा. बीज की जुलाई में बुआई कर देनी चाहिए और लगभग 2-3 सप्ताह की पौध रोपनी चाहिए। जब पौधों को क्यारियों से उखाड़ें, तो क्यारियों में नमी बनाए रखना आवश्यक है, ताकि जड़ों को क्षति न पहुंचे। पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे की दूरी 45-50×10-15 सें.मी. रखते हुए एक छेद में केवल एक ही पौधे की रोपाई करें।

बाजरे की उन्नत संकर प्रजातियां

- पूसा-23, पूसा-415, पूसा-605, पूसा-322, पूसा-1201, एचएचबी-50, एचएचबी-67, एचएचडी-68, एवं बाजरे की संकुल किस्में पूसा कम्पोजिट-383, पूसा-443, पूसा कम्पोजिट-643,



बाजरे की संकर प्रजाति

पूसा कम्पोजिट-612, राज बाजरा चारी-2, राज-171, आईसीएमवी-155, डब्ल्यूसीसी-75, एचसी-4, एचसी-10, आईसीटीपी-8203 प्रमुख हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

- बाजरे की संकर प्रजातियों के लिए 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश तथा देसी प्रजातियों के लिए 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 25 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर बुआई के समय प्रयोग करें। सभी परिस्थितियों में नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा लगभग 3-4 सें.मी. की गहराई पर डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की बची हुई मात्रा अंकुरण से 4-5 सप्ताह बाद खेत में छिड़ककर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए।

अरहर, मूंग एवं उड़द

बुआई का समय

- अरहर की खेती अगेती एवं पछेती फसल के रूप में करते हैं। सिंचित क्षेत्रों में अगेती अरहर की बुआई मध्य जून में पलेवा करके अवश्य करें। मूंग की फसल को मध्य जुलाई से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक बोना चाहिए। उड़द की बुआई का उचित समय जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक अच्छा माना जाता है। देर से बुआई करने पर उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

मृदा का चयन

- हालांकि, अरहर, मूंग एवं उड़द को अधिकांश मृदा में उगाया जा सकता है। फिर भी मृदा का चयन करते समय ध्यान रखना चाहिए कि खेत ऊंचा एवं समतल हो तथा उसमें जल निकास अच्छा हो। उत्तर भारत में अरहर, मूंग एवं उड़द को मटियार दोमट मृदा से लेकर रेतीली दोमट मृदा में उगाया जाता है। इन फसलों के लिए बलुई-दोमट अथवा दोमट मृदा, जिसका पी-एच मान 6.5-7.5 के बीच हो और भूमि जल की गहराई पर हो, सर्वोत्तम रहती है। यदि मृदा में दीमक की समस्या हो, तो इसके प्रकोप से बचने के लिए 20-25 कि.ग्रा./हैक्टर कार्बेरिल (59 प्रतिशत) को मिट्टी में उस समय मिलाना चाहिए, जब खेत की तैयारी अंतिम चरण में हो। इसके अलावा 10 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से एल्डीकार्ब या फोरेट का प्रयोग भी लाभदायक रहता है।



अरहर

अरहर की उन्नत प्रजातियां

- उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के लिए अरहर की उन्नत प्रजातियां जैसे-पूसा अरहर 151, सीजी अरहर 2 आदि प्रमुख हैं।

मूंग की उन्नत प्रजातियां

ज्वार

बुआई

- ज्वार की बुआई इस माह के प्रथम पखवाड़े तक पूरी करें। बुआई से पूर्व बीज को कार्बेण्डाजिम या एग्रोसन जीएन अथवा कैप्टॉन आदि से 2-5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त बीज को जैव उर्वरक एजोस्पीरीलम एवं पीएसबी से भी उपचारित करने से 15-20 प्रतिशत अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। ज्वार की बुआई के लिए 12-15 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर पर्याप्त होता है। इसके लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी एवं पौधे से पौधे की दूरी 45×15 सें.मी. रखी जानी आवश्यक है।



किस्मों का चयन

- ज्वार की उन्नत संकर प्रजातियां जैसे-सीएसएच-1, सीएसएच-9, सीएसएच-11, सीएसएच-13 आदि प्रमुख हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

- ज्वार की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए सिंचित क्षेत्रों में 100-120 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 40-50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की आवश्यकता पड़ती है जबकि असिंचित क्षेत्रों में 50-60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30-40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 30-40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है। सूक्ष्म पोषक तत्वों में जिंक तथा आयरन ज्वार के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन तत्वों की कमी पूरा करने के लिए जिंक का 0.2 प्रतिशत तथा आयरन का 0.15 प्रतिशत घोल का पर्णीय छिड़काव बुआई के 35-40 दिनों बाद अवश्य कर देना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन

- ज्वार की खेती में निराई-गुड़ाई का अधिक महत्व है एवं साथ ही खरपतवारनाशी एट्राजीन (50 प्रति डब्ल्यू.सी.) 0.75-1.0 कि.ग्रा./हैक्टर या एलाक्लोर (50 ई.सी) 1.5-2.0 लीटर/हैक्टर या एट्राजीन+पेण्डीमेथिलीन 0.75-1.0 कि.ग्रा./हैक्टर या एट्राजीन+एलाक्लोर 0.75-1.0 कि.ग्रा./हैक्टर घुलनशील चूर्ण का 600-800 लीटर पानी में घोलकर बुआई के तुरन्त बाद अंकुरण के पूर्व प्रयोग करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।



मूंग

- पूसा 1371, पूसा 0672, पूसा विशाल, पूसा 9531, पूसा रत्ना, पूसा 672, सम्राट (पीडीएम 139), पी.डी.एम. 54 आदि।

उड़द की उन्नत प्रजातियां

- शेखर 1, के.यू.जी.-479, नरेन्द्र उड़द-1, एनडीयू 99-2, आजाद उड़द 1, आजाद उड़द 2, आजाद उड़द 3, शेखर उड़द 1, शेखर उड़द 2, शेखर उड़द 3 आदि।

बीजोपचार एवं राइजोबियम जीवाणु द्वारा बीज शोधन

- मृदा एवं बीजजनित कई कवक एवं जीवाणुजनित रोग होते हैं, जो अंकुरण के समय तथा बाद में बीजों को काफी क्षति पहुंचाते हैं। बीजों के अच्छे अंकुरण तथा स्वस्थ पौधों की पर्याप्त संख्या हेतु बीजों को कवकनाशी से उपचार करने की सलाह दी जाती है। इसके लिये प्रति कि.ग्रा. बीज को 2-2.5 ग्राम थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेण्डाजिम से उपचार करने के बाद राइजोबियम कल्चर से बीजोपचार करना चाहिए। उपचार हेतु 500 मि.ली. स्वच्छ जल में 100 ग्राम गुड़ एवं 2 ग्राम गोंद को पानी में मिलाकर गर्म कर लेना चाहिए। इसके बाद इसे ठंडा करके एक पैकेट राइजोबियम कल्चर/टीका (10 कि.ग्रा. बीज) मिलाकर अच्छी तरह बीजों को उपचारित कर लेना चाहिए एवं उपचारित बीजों को छाया में सुखाना चाहिए। बुआई के समय बीज डालने से पहले सल्फर का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। इसी प्रकार फॉस्फेट घुलनशील बैक्टीरिया से बीज का शोधन करना भी लाभदायक होता है।



उड़द

खरपतवार प्रबंधन

- बुआई के प्रारंभिक 4-5 सप्ताह तक खरपतवार की समस्या अधिक रहती है। पहली सिंचाई के बाद निराई कर देनी चाहिए। चौड़ी पत्ती तथा घास वाले खरपतवार को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिये पेण्डीमेथिलीन (30 ई.सी.) 3.30 लीटर या एलाक्लोर की 4 लीटर या फ्लूक्लोरोलिन (45 ई.सी.) 2.20 लीटर या मेटोलाक्लोर (50 ई.सी.) 2.0 लीटर को 600-800 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के तुरन्त बाद या अंकुरण से पहले छिड़काव कर देना चाहिए। अरहर की फसल में बुआई के 25 दिनों बाद निराई-गुड़ाई करके खरपतवार नियंत्रण तथा सघन पौधों को निकाल देना चाहिए।

मूंगफली

जलवायु एवं मृदा

- मूंगफली की खेती उष्णकटिबंधीय जलवायु वाले प्रदेशों में की जाती है। पौधे के अच्छे विकास के लिए सूर्य के प्रकाश और गर्मी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए 60 से 130 सें.मी. वर्षा काफी होती है। इसकी खेती के लिए उचित जल निकासी वाली हल्की पीली दोमट मृदा सबसे उपयुक्त होती है। साथ ही भूमि का पी-एच मान 6 से 7 के बीच होना चाहिए।

उन्नत प्रजातियां

- जीजी 3, जीजी 6, जीजी 12, जीजी 11, जीजी 20, जे 11, जीएयूजी 1, जेएल 24, टीएजी 24, टीएजी 26, और आरजी-141 आदि।

बुआई

- खरीफ मौसम की फसल की बुआई का उचित समय जून का दूसरा पखवाड़ा है। हालांकि असिंचित क्षेत्रों में जहां बुआई मानसून के बाद की जाती है, जुलाई के पहले पखवाड़े में बुआई के काम को पूरा कर लें, ताकि निक्रोसिस रोग से बचा जा सके। मूंगफली की मध्यम और अधिक फैलने वाली किस्मों में क्रमश: 80-100 और 60-80 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर है, जबकि गुच्छेदार किस्मों में बीज की उचित मात्रा 100-125 कि.ग्रा./हैक्टर पर्याप्त होती है। गुच्छेदार किस्मों को 30×10 सें.मी. एवं फैलने वाली किस्मों को 45-60×10-15 सें.मी. की दूरी एवं 4-6 सें.मी. की गहराई पर बोएं। यदि संभव हो तो मूंगफली की बुआई मेड़ों पर करें। बुआई से पूर्व बीज को 2-3 ग्राम थीरम या कार्बेण्डाजिम/कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। इस उपचार के 5-6 घंटे बाद, बीज को उपयुक्त राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें। उपचार के बाद बीज को छाया में सुखायें एवं शीघ्र ही बुआई के लिए उपयोग करें।

पोषक तत्व प्रबंधन

- मृदा परीक्षण के अभाव में रासायनिक

सारणी 2. बीजदर, दूरी एवं पोषक तत्व प्रबंधन

फसल	बीज की मात्रा (कि.ग्रा./हैक्टर)	पंक्ति से पंक्ति की दूरी (सें.मी.)	पौधे से पौधे की दूरी (सें.मी.)	नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश (कि.ग्रा./हैक्टर)	सल्फर एवं जस्ता (कि.ग्रा./हैक्टर)
अगेती अरहर	15-20	45	10-15	15.20: 40.50: 20	20: 15
पछेती अरहर	10-15	60-75	20-25	15.20: 40.50: 20	20: 15
उड़द	15-18	30-35	10	15: 45: 0	20: 0
मूंग	15-18	30-35	7-10	15: 50: 50	20: 20

इनके अतिरिक्त नवीनतम प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव यदि फली बनने की अवस्था में किया जाये, तो उपज में निश्चित रूप से वृद्धि होती है।



मूंगफली

उर्वरकों के उपयोग के साथ-साथ 5 से 10 टन/हैक्टर गोबर की खाद का उपयोग करें। नाइट्रोजन यौगिकीकरण क्रिया के शुरू होने से पहले की मांग की पूर्ति के लिए सिंचित क्षेत्रों में 20-30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 30-40 कि.ग्रा. पोटाश तथा बारानी क्षेत्रों में 15-20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30-40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 20-25 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। इनके अतिरिक्त गंधक और कैल्शियम का मूंगफली की उपज और गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया है, जिसके लिए 200-400 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा और जिप्सम की आधी मात्रा बुआई के समय मृदा में अच्छी तरह मिला दें। जिप्सम की शेष आधी मात्रा को फूल निकलने के समय 5 सें.मी. की गहराई पर पौधे के पास दिया जाना चाहिए। जस्ते की कमी की पूर्ति हेतु 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट एवं बोरॉन की कमी की पूर्ति हेतु 2 कि.ग्रा. बोरेक्स प्रति हैक्टर का प्रयोग करें।

खरपतवार प्रबंधन

- खरपतवार का सही नियंत्रण न करने पर फसल उत्पादन में 30-50 प्रतिशत तक कमी आ जाती है। इसके लिए कम से कम दो बार निराई-गुड़ाई, 20-25 दिनों और 40-45 दिनों पर की जानी चाहिए। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु एलाक्लोर (50 प्रतिशत ई.सी.) 1.5-2.0 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर या पेण्डीमेथिलीन (30 प्रतिशत ई.सी.) 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर खरपतवारनाशी का बुआई के बाद दूसरे दिन 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। फसल की बुआई के पूर्व फ्लूक्लोरेलिन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व/हैक्टर की दर से छिड़काव करके मिट्टी में मिलाने से भी खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है।

सोयाबीन

भूमि का चयन एवं तैयारी

- सोयाबीन की खेती के लिए उचित जल निकास वाली दोमट मृदा सबसे अच्छी रहती है। खेत की तैयारी के समय दो बार हैरो या मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने के उपरान्त देसी हल से जुताई कर पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। पलेवा के 6-7 दिनों बाद खेत की पुन: देसी हल से जुताई कर देनी चाहिए। इसके बाद ही बीज बुआई करनी चाहिए।

उन्नत प्रजातियां

- उत्तरी मैदानी क्षेत्रों के लिए पूसा सोयाबीन 14, पूसा सोयाबीन 12, पूसा 9712,पूसा 9814, पूसा 16, पीके 416, मध्य भारत क्षेत्र के लिए एनआरसी



सोयाबीन

7, एआरसी 37, जेएस. 335, जेएस. 93-05, जेएस. 95-60, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए बिरसा सोयाबीन 1, इंदिरा सोया 9, प्रताप सोया 9, एमएयूएस 71, जेएस. 80-21, उत्तर पहाड़ी क्षेत्र के लिए शिलाजीत, पूसा 16, वी एल सोया 2, वी एल सोया 47, हरा सोया आदि प्रमुख हैं।

बुआई

- सोयाबीन की खेती मुख्य रूप से खरीफ में होती है। इसकी बुआई उत्तरी मैदानी

सूरजमुखी

जलवायु एवं मृदा

- सूरजमुखी की 26 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान में अच्छी फसल ली जा सकती है। इसकी खेती अच्छे जल निकास वाली सभी तरह की मृदा में की जा सकती है। दोमट एवं बलुई दोमट मृदा जिसका पी-एच मान 6.5-8.5 हो, इसके लिए बेहतर होती है।



सूरजमुखी की संकर प्रजातियां

- केवीएसएसएच-1, एसएच-3322, एमएसएफएच-1785-90, केवीएसएसएच-44, डीआरएसएच-1, पीएसएफएच-118, पीएसएफएच-569, एचएसएफएच--848, मारूती, केवीएसएसएच-41 तथा **उन्नत संकुल प्रजातियां:** सूर्या, माडर्न, डीआरएस-108, को-5, टीएएसएफ-82, एलएसएफ-8, फुले रविराज आदि प्रमुख हैं।

बुआई

- सूरजमुखी की बुआई इस माह के प्रथम पखवाड़े में कर लें। बुआई से पूर्व बीजों को थीरम या कैप्टॉन की 3.0 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। इससे मृदाजनित रोगों से बीज सड़ता नहीं हैं और जमाव अच्छा होता है। संकर प्रजातियों का 7-8 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर 60×20 सें.मी. की दूरी पर तथा संकुल प्रजातियों का 12-15 कि.ग्रा. बीज/हैक्टर 45×20 सें.मी. की दूरी पर करनी चाहिए। बुआई सीडड्रिल या पंक्तियों में करें। जब पौधे लगभग 10 दिनों के हो जाएं और कहीं पर एक से अधिक पौधे दिखाई पड़ें, तो ओज वाले पौधे को छोड़कर बाकी को उखाड़ दें।

पोषक तत्व प्रबंधन

- सामान्यत: सूरजमुखी की फसल में उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए। मृदा परीक्षण न होने की दशा में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40 कि.ग्रा. पोटाश एवं 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हैक्टर की दर से बुआई के समय प्रयोग करना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

- रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए पेण्डीमेथिलीन (30 ई.सी.) 3.3 लीटर या प्री-इमरजेंस फ्लूक्लोरीन का 2 लीटर/हैक्टर की दर से 600 लीटर पानी में घोलकर बुआई के 1-2 दिनों बाद छिड़क देना चाहिए। यदि आवश्यकता पड़े 30-35 दिनों बाद एक गुड़ाई करें। इस समय पौधों के दोनों तरफ मिट्टी भी चढ़ा देनी चाहिए।

एवं मध्य क्षेत्रों में मध्य जून से मध्य जुलाई तक, दक्षिणी क्षेत्रों में मध्य जून से जुलाई अंत तक, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में मध्य जून से मध्य जुलाई तक पूरी कर लें। यदि बीज की अंकुरण क्षमता कम है, तो बीज की मात्रा उसी दर से बढ़ा देनी चाहिए। मोटा दाना 80-85 कि.ग्रा., मध्यम दाना 70-75 कि.ग्रा. एवं छोटा दाना 60-65 कि.ग्रा./हैक्टर पर्याप्त होता है। सोयाबीन की बुआई पंक्तियों में 45×50 सें.मी. की दूरी में करनी चाहिए। बुआई से पहले बीज को 2 ग्राम थीरम + 1 ग्राम कार्बेण्डाजिम/कि.ग्रा. बीज की दर से भली प्रकार से उपचारित कर लेना चाहिए। इसके बाद राइजोबियम एवं पीएसबी जीवाणु टीके से बीज को 5 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

पोषक तत्व प्रबंधन

- सोयाबीन से अच्छा उत्पादन लेने के लिए लगभग 5-10 टन/हैक्टर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद बुआई से लगभग 20-25 दिनों पहले खेत में अच्छी तरह से मिला देनी चाहिए। उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना चाहिए। यदि मृदा परीक्षण नहीं करवाया गया है, तो उन्नत प्रजातियों के लिए

गन्ना

अंत:सस्यन क्रियाएं

- फसल में शेष बची एक बोरी यूरिया जुलाई में मानसून वर्षा आने पर डालें। गन्ने की देर से बोई गयी फसल में निराई-गुड़ाई करने के बाद इस माह मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरा कर लें। जल निकास का उचित प्रबंधन करें। पर्याप्त वर्षा न होने पर 15-20 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें। शरद कालीन गन्ने को गिरने से बचाने के लिए बंधाई अवश्य करें।



पौध संरक्षण

- चोटीबेधक की मादा तितली जुलाई माह में पत्तियों की निचली सतह पर समूह में अण्डे देती है। अण्डे वाली पत्तियों को नष्ट कर दें तथा कार्बोफ्यूरॉन 3 जी 25 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से अवश्य प्रयोग करें। चोटीबेधक के नियंत्रण हेतु 4 ट्राइकोकार्ड/हैक्टर की दर से प्रयोग करें। गुरदासपुर बेधक के नियंत्रण हेतु सूखे अगोले को काटकर जमीन में दबा दें तथा क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी./लीटर/हैक्टर की दर से छिड़काव करें एवं सफेद गिडार के नियंत्रण हेतु लाइट ट्रैप या कीटनाशी छिड़काव कर नियंत्रण करें।

तिल

भूमि का चयन एवं तैयारी

- तिल की खेती मटियार एवं चिकनी दोमट मृदा में सफलतापूर्वक की जा सकती है। रबी/जायद की फसलें काटने के बाद दो जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए, इसके बाद कल्टीवेटर या देसी हल से दो बार जुताई करके खेत अच्छी तरह समतल कर लेना चाहिए।

उन्नत किस्में

- गुजरात तिल नं-1, गुजरात तिल नं-2, फुले तिल नं-1, प्रताप, ताप्ती, पदमा, एन.-8, डी.एम. 1 आदि।

बुआई

- खरीफ फसल के लिए जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक तिल की बुआई को उपयुक्त पाया गया है। समय से बुआई के लिए 3-4 कि.ग्रा. एवं देर से बुआई के लिये 4-5 कि.ग्रा./हैक्टर बीज की मात्रा उचित रहती है। बीजजनित रोगों से बचाव हेतु 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टॉन प्रति कि.ग्रा. की दर से बीज शोधन हेतु प्रयोग करें। पंक्तियों के बीच का फासला 30-45 सें.मी. का रखें एवं बीज को 1.5-2.5 सें.मी. की गहराई पर डालें। बुआई के 15 से 20 दिनों बाद पौधों की छंटाई करते समय पौधे से पौधे की दूरी 10-15 सें.मी. रखें।



पोषक तत्व प्रबंधन

- उर्वरकों की मात्रा मृदा की जांच और पानी की उपलब्धता पर निर्भर करती है। मृदा की जांच संभव न होने की अवस्था में सिंचित क्षेत्रों में 40-50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20-30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर तथा वर्षा आधारित फसल में 20-25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन और 15 से 20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग करें। मुख्य तत्वों के अतिरिक्त 10 से 20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर गंधक का उपयोग करने से तिल की उपज में वृद्धि की जा सकती है। सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन की आधी मात्रा और अन्य उर्वरकों की पूरी मात्रा, जबकि असिंचित क्षेत्रों में सभी उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के समय बीज से 3-4 सें.मी. गहराई पर प्रयोग करें, शेष नाइट्रोजन की आधी मात्रा को बुआई के 30-35 दिनों बाद खड़ी फसल में प्रयोग करें।

खरपतवार नियंत्रण

- खेत को बुआई के 25-30 दिनों तक खरपतवारों से मुक्त रखना अनिवार्य है। पहली निराई-गुड़ाई फसल बोने के 15 से 20 दिनों के अन्दर करनी चाहिए। यदि खरपतवार अधिक हो, तो बुआई के 35 से 40 दिनों के अंदर दूसरी निराई-गुड़ाई करें। तिल में एक कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से फ्लूक्लोरेलिन सक्रिय दवा को 400-500 लीटर पानी में घोलकर गुड़ाई से पहले खेत में छिड़कने से भी खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है। फसल बोने से पहले दवाई को सतही मिट्टी में मिला दें। इसके अतिरिक्त एलाक्लोर (1-75 कि.ग्रा.) या पेण्डीमेथिलीन (1 कि.ग्रा.) के प्रयोग बुआई के 2-3 दिनों के अंदर करें।

कपास

- कपास एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जो व्यावसायिक क्षेत्र में श्वेत स्वर्ण के नाम से जानी जाती है। इसकी खेती रेतीली लवणीय तथा सेम वाली मृदा को छोड़कर सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है।

बुआई

- उत्तर भारत के अधिकांश क्षेत्रों में कपास की बुआई मानसून के आने पर ही की जाती है। हालांकि यदि सिंचाई की अच्छी व्यवस्था हो, तो मई में भी इसकी बुआई की जा सकती है। बुआई के लिए सीड-कम-फर्टी ड्रिल अथवा प्लांटर का प्रयोग कर सकते हैं। अमेरिकन, संकर और देसी कपास की क्रमशः 15-20, 4-5 और 10-12 कि.ग्रा./हैक्टर बीज पर्याप्त होता है। देसी अथवा अमेरिकन कपास के लिए 60×30 सें.मी. तथा संकर किस्मों के लिए 90×40 सें.मी. पंक्ति से पंक्ति और पौधे से पौधे की दूरी रखनी चाहिए। बोने से पूर्व बीजों को प्रति कि.ग्रा. 2.5 ग्राम कार्बेण्डाजिम या कैप्टॉन दवा से उपचारित कर फसल को राइजोक्टोनिया जड़ गलन, फ्यूजेरियम उकठा और अन्य मृदाजनित फफूंद से होने वाली व्याधियों को बचाया जा सकता है। इमिडाक्लोरोप्रिड 7.0 ग्राम अथवा कार्बोसल्फॉन 20 ग्राम/कि.ग्रा. ग्राम बीज उपचार से 40-60 दिनों तक रस चूसक कीटों से सुरक्षा मिलती है। दीमक से बचाव के लिए 10 मि.ली. पानी में 10 मि.ली. क्लोरोपाइरीफॉस मिलाकर बीज पर छिड़क दें तथा 30-40 मिनट छाया में सुखाकर बुआई कर दें।



किस्मों का चयन

- कपास की संकर प्रजातियां जैसे-लक्ष्मी, एच.एस. 45, एच.एस.6, एल.एच. 144, एच.एल. 1556, एफ. 1861 एवं देसी प्रजातियां जैसे-एच. 777, एच.डी. 1, एच. 974 एवं एल.डी. 327 आदि प्रमुख हैं।

पोषक तत्व प्रबंधन

- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर किया जाना चाहिए। कपास की अमेरिकन एवं देसी किस्मों के लिये 60-80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 20-30 कि.ग्रा. पोटाश और संकर किस्मों के लिये 150-60-60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है। 25 कि.ग्रा. जिंक प्रति हैक्टर का प्रयोग लाभदायक है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं बाकी उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के समय डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की बाकी मात्रा फूल आने के समय सिंचाई के बाद में देनी चाहिए।

20-25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60-80 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 40-50 कि.ग्रा. पोटाश और 20-25 कि.ग्रा. गंधक/हैक्टर पोषक तत्वों की मात्रा देनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

- बुआई के 30 और 45 दिनों बाद निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई के बाद और अंकुरण से पहले फ्लूक्लोरोलिन या ट्राइफ्लोरालिन 1 कि.ग्रा. या एलाक्लोर (50 ई.सी.) की 4 लीटर या पेण्डीमेथिलीन 1 कि.ग्रा. या क्लोमोजोन 1 कि.ग्रा. मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

सब्जी फसलें

फूलगोभी

- अगेती फूलगोभी की प्रजाति पूसा शरद, पूसा हाइब्रिड-2, पूसा दीपाली, काशी क्वारी, अर्ली क्वारी, पूसा कार्तिकी, पूसा अर्ली सिंथेटिक की रोपाई का उपयुक्त समय है। रोपाई 45×30 सें.मी. की दूरी पर करें एवं 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर का प्रयोग करें। रोपित खेतों में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।



अगेती फूलगोभी

हरी मिर्च

- अगेती हरी मिर्च की प्रजाति पूसा सदाबहार, काशी अनमोल, काशी गौर एवं पूसा ज्वाला, पंत सी-1, पंजाब लाल एवं संकर किस्में काशी सुर्ख, काशी अगेती, काशी तेज, अर्का मेघना, अर्का हरिता की रोपाई का उपयुक्त समय है। हरी मिर्च में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर कि दर से प्रयोग करें एवं रोपाई 45×30 सें.मी. की दूरी पर करें।

भिंडी



भिंडी की उन्नत किस्में जैसे-पूसा ए-5, पूसा ए-4, पूसा सावनी, परभणी क्रान्ति, काशी प्रगति, काशी विभूति, काशी सातधारी, काशी क्रान्ति एवं संकर किस्में जैसे-काशी भैरव, सारिका, सिंजेंटा-152, महिको-8888, यू.एस.-7109, एस.-5, जे.के. हरिता आदि प्रमुख हैं। बुआई हेतु बीज दर 8-10 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर, बुआई की दूरी 60×30 सें.मी., समय जून-जुलाई (खरीफ) एवं उर्वरक 100 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर उपयुक्त माना जाता है। यदि गोबर की खाद उपलब्ध है, तो 150 क्विंटल/हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

बैंगन

- यह एक गर्म और वर्षा ऋतु की फसल है, जो पाले को सहन नहीं कर सकती। इसकी खेती के लिए 6 से 7 पी-एच मान वाली बलुई दोमट, अच्छी जल



बैंगन

निकासी वाली मृदा उपयुक्त है। अगेती बैंगन की उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा पर्पल क्लस्टर, पूसा बिंदु, पूसा कौशल, पूसा श्यामला, पूसा अंकुर एवं गोल बैंगन की उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा उत्तम, काशी संदेश, पंत ऋतुराज, रामनगर जॉयन्ट आदि प्रमुख हैं। अच्छी जमाव क्षमता वाला 400 ग्राम तथा 250-300 ग्राम संकर किस्मों का बीज/हैक्टर की दर से पर्याप्त होता है।

- बैंगन की नर्सरी जुलाई में लगाने से अक्टूबर में सब्जी मिलने लगेगी। रोपाई 75×60 सें.मी. की दूरी पर की जाती है। खेत की तैयारी के समय 25 टन/हैक्टर, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 60 कि.ग्रा. पोटाश तथा 150 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की आधी मात्रा मिट्टी में मिला दें तथा बाकी आधी नाइट्रोजन की मात्रा को फूल आने के समय प्रयोग करें। रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के लिए पेण्डीमेथिलीन नामक खरपतवारनाशी की 3 लीटर मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से पौध रोपाई से पहले प्रयोग करें एवं आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहें।

कद्दूवर्गीय सब्जियां

- जून के अन्त से जुलाई का समय कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुआई के लिए सर्वोत्तम होता है। खेत में लगभग 45 सें.मी. चौड़ी तथा 30-40 सें.मी. गहरी नालियां बना लें। बुआई से पहले नालियों में पानी भर दें, जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुआई के लिए उपयुक्त हो जाए, तो बुआई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके बीज बोएं।
- **लौकी:** लौकी की उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा नवीन, पूसा संदेश, पूसा सतुंष्टि, पूसा समृद्धि, पूसा हाइब्रिड-3, काशी गंगा तथा अर्का बहार प्रमुख हैं। लौकी का बीज दर 4-5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है। लौकी में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 3 मीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 0.5 मीटर पर बुआई करें।
- **चप्पन कद्दू:** इसकी उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा पसंद, पूसा अलंकार, ऑस्ट्रेलियन ग्रीन एवं पैटी पैन प्रमुख हैं। इसकी बीज दर 5-6 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है।
- **कद्दू:** इसकी उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा विश्वास, पूसा विकास, पूसा हाइब्रिड-1, अर्का चन्दन, काशी हरित प्रमुख हैं। कद्दू का बीज दर 3-4 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है।
- **तोरई:** चिकनी तोरई की उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा, काशी दिव्या, पूसा सुप्रिया एवं धारीदार तोरई की उन्नत प्रजाति जैसे-पूसा नूतन, अर्का सुजात, सतपुतिया, अर्का सुमीत एवं पूसा नसदार प्रमुख हैं। तोरई की बीज दर 5.0-5.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है। इनकी बुआई 2.5 मीटर×45-50 सें.मी. दूरी पर करें।
- **करेला:** करेला की पूसा दो मौसमी एवं पूसा विशेष किस्में जुलाई के पहले



लौकी

सप्ताह तक लगा सकते हैं। इसके 3 कि.ग्रा. बीज को 12-20 घंटे तक भिगोयें तथा 1.7 फीट चौड़ी नाली के दोनों तरफ बुआई करें। नालियों की आपसी दूरी 6 फीट रखें। 10 टन देसी खाद, 1/2 बोरा यूरिया, 1.5 बोरा सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 1/2 बोरा म्यूरेट ऑफ पोटाश आखिरी जुताई के समय मृदा में मिला दें। बीजाई के समय कीटों की रोकथाम के लिए फ्यूराडॉन मिट्टी में मिला दें। इसकी 60-70 दिनों में 600-700 कि.ग्रा. पैदावार मिल जाती है।

- **टिंडा:** इसकी उन्नत प्रजाति पूसा रौनक, पजांब टिंडा, अर्का टिंडा प्रमुख हैं। टिंडे के लिए बीज दर 6-7 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है।
- **खीरा:** खीरे की उन्नत प्रजाति जैसे-जापानी लांग ग्रीन, स्ट्रेट, पूसा उदय, पूसा बरखा, पोइनसेट तथा पूसा संयोग प्रमुख हैं। खीरे की बुआई हेतु बीज दर 2.0-2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 1.5 मीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 30-45 सें.मी. रखें।
- **कुंदरू:** इसकी रोपाई के लिए यह उपयुक्त समय है। कुंदरू में नर एवं मादा पौधे अलग-अलग होते हैं। अच्छी उपज लेने के लिए 10 मादा पौधों पर एक नर पौधा अवश्य लगायें। ग्रीष्म ऋतु में 3 मीटर की दूरी पर 30×30×30 सें.मी. आकार की खोदे गये गड्ढों में 3 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद या नाडेप खाद, 50 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सुपर फॉस्फेट, 100 ग्राम पोटाश प्रति गड्ढे की दर से अच्छी तरह मिट्टी एवं बालू में मिलाकर 10 सें.मी. की ऊंचाई तक जुलाई के प्रथम सप्ताह तक भर दें तथा वर्षा प्रारंभ होते ही कलिकायुक्त विकसित कलमों को इन गड्ढों में रोप दें।
- **पेठा:** पेठा की उन्नत प्रजाति पूसा श्रेयाली, पूसा उर्मी, पूसा उज्जवल, काशी धवल, काशी उज्जवल, काशी सुरभि प्रमुख हैं। पेठा का बीज दर 5-6 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में बुआई के लगभग 25-30 दिनों बाद पौधों के बढ़वार के समय प्रति हैक्टर 15-20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन की टॉप ड्रेसिंग करें। जून में बोयी गयी कद्दूवर्गीय सब्जियों में मचान बनाकर सहारा दें तथा उचित जल निकास की व्यवस्था करें। कद्दूवर्गीय सब्जियों में बुआई के लगभग 25-30 दिनों बाद 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से टॉप ड्रेसिंग करें।
- **खरीफ प्याज:** खरीफ की प्याज के लिए पौधशाला में बीज की बुआई 10 जुलाई तक कर दें। एक हैक्टर की रोपाई के लिए 12-15 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है।
- **हल्दी:** हल्दी में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर बुआई के 35-40 दिनों बाद पंक्तियों के बीच में प्रयोग करें।

- **अदरक:** अदरक में बुआई के 40 दिनों बाद प्रति हैक्टर 25 कि.ग्रा. नाइट्रोजन मिट्टी चढ़ाते समय दें।
- **जिमीकन्द/सूरन:** इनकी फसल में 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से बुआई के 65-70 दिनों बाद टॉप ड्रेसिंग करें।
- **चौलाई:** बरसात वाली चौलाई की बुआई पूरे महीने की जा सकती है। इसके लिए 1.5-2.0 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होता है।

बागवानी फसलें

- **अमरूद:** अमरूद के नये बाग लगाने का यह उपयुक्त समय है। इसकी प्रजाति जैसे-इलाहाबाद सफेदा, सरदार, अर्का मृदुला, अर्का अमूल्या, अर्का किरण, संकर अर्का अमूल्य आदि प्रमुख हैं।
- **आंवला:** आंवला के नये बाग इस माह में लगायें। इसकी प्रजाति जैसे-नरेन्द्र आंवला-4, नरेन्द्र आंवला-6, नरेन्द्र आंवला-7, नरेन्द्र आंवला-10, फ्रांसिस, कृष्णा, चकैया, कंचन (एनए-4) आदि प्रमुख हैं। आंवले के बागों में एफिड की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 0.04 प्रतिशत का घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करें।
- **केला:** इसके नये सकर्स खेतों में रोपें, जिसके लिए इसकी उन्नत प्रजाति जैसे-बसराई ड्वार्फ, हरी छाल, रोबस्टा, कोठिया, मालभोग आदि प्रमुख हैं। केले की खेती में अवांछित पत्तियों को निकाल देना चाहिए। पेड़ों पर मिट्टी चढ़ाकर जल निकास का प्रबंधन करना चाहिए। फल आने वाले पौधों में सहारा देने के लिए थूनियां लगानी चाहिए। नए बाग लगाने के लिए अच्छी एवं स्वस्थ पत्तियां, जो तलवार के आकार की हों, उत्तम किस्मों से लेकर लगानी चाहिए।
- **बेर:** बेर की प्रजाति जे.जी.-2, विलायती, उमरान, कैथली, सनोर-2 आदि का प्रयोग कर नये बाग इस माह में तैयार करें। बेर में मिलीबग कीट की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- **लीची:** लीची में गूटी बांधने का कार्य करें एवं रोपाई का कार्य में माह के अंत तक करें। इसकी प्रमुख प्रजातियां बेदाना, मुजफ्फरपुर, कलकतिया, देहरादून, रोजसेन्टेड शाही, त्रिकोलिया, अझौली, ग्रीन, देसी, डी-रोज, अर्ली बेदाना, स्वर्ण रूपा, चाइना, पूर्वी, कसबा आदि हैं।
- **पपीता:** इसकी प्रजाति जैसे-पूसा नन्हा, पूसा डिलीशियस वाशिंगटन, हनीड्यू, रेड लेडी, पूसा मैजेस्टी, पूसा ड्वार्फ, पूसा जॉयन्ट, अर्का सूर्या आदि प्रमुख हैं।
- **नीबू:** नीबूवर्गीय के पौधों को सिल्ला, लीफ माईनर एवं सफेद मक्खी से बचाव के लिए 770 मि.ली. ऑक्सीडमेटोन-मिथाइल 27 ईसी 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। तने एवं फल के गलने का बचाव बरसात की पहली बौछार के तुरंत बाद 0.3 प्रतिशत कापर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें।
- **लोकाट:** बागों में पेड़ी की कटाई-छंटाई का कार्य समाप्त करना चाहिए। बाग में जल निकास के लिए नालियां बना लेनी चाहिए। कटाई-छंटाई के बाद ब्लॉइटॉक्स-50 का छिड़काव करके कटे भागों में बोर्डो मिश्रण का लेप लगा देना चाहिए। नए बाग लगाने के लिए 2-3 प्रजातियों के पौधे एक साथ लगाने चाहिए।
- **कटहल:** कटहल के फलों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें तथा जल निकास का उचित प्रबंधन करना चाहिए। बाग लगाने के लिए पौधों की रोपाई का कार्य शुरू कर देना चाहिए। ■

आम



आम की तैयार हो रही प्रजातियों को समय पर बाजार भेजने की व्यवस्था करें एवं जुलाई के आखिरी सप्ताह में आम के नये पौधों को लगाएं। फल तुड़ाई के बाद वृक्षों की कटाई-छंटाई करें। सूखी एवं रोगी टहनियों को काटकर जला दें। आम की प्रजाति जैसे-पूसा प्रतिभा, पूसा अरुणिमा, पूसा श्रेष्ठ, पूसा लालिमा, अर्का अरुणा, अर्का अनमोल, चौसा प्रमुख हैं। आम में शाखा कीट की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस (36 ई.सी.) की 125 मि.मी. अथवा डाई-मैथोएट (30 ई.सी.) 150 मि.मी. मात्रा को 100 लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अन्तराल पर वृक्षों पर छिड़काव करें। आम एवं लीची में रेडरस्ट तथा शूट मोल्ड रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत (100 ग्राम दवा 100 लीटर पानी में घोलकर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर) पेड़ों पर छिड़काव करें।

अंगूर



अंगूर के बागों में मध्यम समय में पकने वाली किस्मों के फल तोड़कर बाजार भेजें। बाग में पानी के निकास का प्रबंध करना चाहिए। फल सड़न रोग की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 0.04 प्रतिशत (40 मि.ली. प्रति 100 लीटर पानी) तथा ब्लाइटॉक्स 0.3 प्रतिशत (300 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें।

पुष्प एवं सगंधीय पौधे

- प्रत्येक ऋतु का बागवानी की दुनिया में अपना अलग महत्व होता है। मानसून का मौसम बागवानी प्रेमियों के लिए पौधे लगाने और दोबारा गमले भरने (री-पॉटिंग) के लिए सबसे उत्तम समय होता है।
- भारत में वर्षा ऋतु में उगाए जाने वाले फूल हैं: बालसम, गेंदा, कॉसमॉस, सूरजमुखी, जीनिया, क्लियोम, सेल्विया।
- जरबेरा के पुराने पौधों को विभाजित करके लगाएं।
- नरगिस के बल्ब का भंडारण करें।
- गुलदाउदी में शीर्ष नोचन का कार्य करें।
- रजनीगंधा, ग्लैडियोलस में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई-गुड़ाई करें तथा तथा पोषक तत्वों के मिश्रण का 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें। इसके साथ ही जल निकास की व्यवस्था करें। रजनीगंधा के स्पाइक (पुष्प डन्डियों) को समय-समय पर तोड़ लें।